IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय इतिहास में जम्मू की कलाकृतियों का महत्व

शोध छात्रा
दीपिका उप्रैती
चित्रकला विभाग
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

भारत वि"व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। भारत की जीवंत संस्कृति एि"ाया और उससे आगे विभिन्न रूपों में दिखी है और अभी भी विदे"ाों में फल फूल रही है। भारतीय कला अपनी प्राचीनता तथा विविधता के लिए विख्यात रही है। भारतीय जनमानस कला को अपना एक अं"ा मानकर चला है। वह कला का विकास और निर्माण नहीं करता, बल्कि कला को जीता है। उसकी जीवन भौली और जीवन का हर कार्य कला से परिपूर्ण है। यदि एक सामान्य भारतोय की जीवनचर्या का अध्ययन किया जाए तो, स्पश्ट होता है कि उसके जीवन का हर एक पहलू कला से परिपूर्ण है। जीवन के दैनिक क्रिया–कलापो के बीच उसके पूजा–पाठ, उत्सव, पर्व–त्योहार, भाादी–विवाह या अन्य घटनाओं से विविध कलाओं का घनिश्ट सम्बन्ध है। इसीलिए भारत की चर्चा तब तक अपूर्ण मानी जाएगी, जब तक की उसके कला पक्ष को भाामिल न किया जाए। कला लोगों की संस्कृति में एक मूल्यवान विरासत है।

जब कोई कला की बात करता है तो आमतौर पर उसका अभिप्राय दृश्टि मूलक कला से होता है जैसे वास्तुकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला। अतीत में ये तीनों पहलू आपस में मिले हुए थे। वास्तुकला में ही मृर्तिकला एवं चित्रकला का समावे"ा था। मध्यकालीन मंदिरों में तो चित्रकला तथा मूर्तिकला के उत्कृश्ट उदाहरण मिलते है। इस काल में राजा, महाराजा, बाद"ाहों, नबाबों के महलों में भी चित्र"ालाऐं बनने लग गई थी। विद्वानों का मानना है कि भारतीय कला धर्म से प्ररित हुई। इस बारे में कुछ नकारने जैसा भी नहीं है। हो सकता है, कलाकारों, हस्ति"ाल्पियों ने धर्मचार्यों के निर्दे"ाानुसार काम किया हो, स्वयं को अभिव्यक्त करते समय उन्होनें संसार को जैसा देखा वैसा ही दिखाया। यह सही है कि भारतीय कला के माध्यम से जो पावन दृश्टि को ही अभिव्यक्त किया गया, जो भौतिक संसार के पीछे छिपे

देव तत्वों से जीवन और प्रकृति की सनातन विशमता और सबसे ऊपर मानवीय तत्व से हमे"ाा अवगत रहती है।

भारत एक ऐसा दे"ा है जो युगों तक विकसित होता रहा है और जिसने एक सुदीर्घ सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखी है। इसके इतिहास के हर युग ने आज तक अपनी विरासत छोड़ी है, इसी भारतीय इतिहास के अन्तर्गत जम्मू राज्य अपना एक अलग ही महत्व रखता है। जम्मू से प्राप्त कलाकृतियों से एक बात अव"य सिद्ध हो जाती है की अट्ठारहवीं भाताब्दी में जम्मू राज्य के अन्तर्गत चित्रण की कोई न कोई भौली अव"य विद्वमान थी। ''जम्मू राज्य सोलहवीं भाताब्दी में उत्तरी पहाड़ियों में सबसे बड़ा राज्य बन गया था। अट्ठारहवीं भाताब्दी में जम्मू के राजा ध्रुवदेवसिंह (1703–1735 ई0) ने राज्य विस्तार किया और उसके उत्तराधिकारी राजा रनजीतदेव (1735–1791ई0) ने भी राज्य विस्तार की नीति को सफलतापूर्वक अपनाया और 1750ई0 तक राज्य की सीमा चिनाव और रावी के बीच विस्तर्ण क्षेत्र पर स्थापित हो चुकी थी और जम्मू की राजसत्ता का प्रभाव खिस्तवाड़, भाद्रवाह, मनकोट, बन्धलता, बसोहली तथा जसरौटा आदि राज्यों पर स्थापित हो गया था।''[1] मैदानी भागों में हो रहे युद्धों के कारण वहॉ से पलायन करने वाले कलाकार, मुगलो तथा धनी वणिको आदि ने जम्मू में भारण लेना प्रारम्भ कर दिया था, जिस कारण जम्मू राज्य और अधिक समृद्ध"ाील हो गया। मुगल भाासक औरंगजेब के भााही संरक्षण के अभाव के कारण चित्रकारों ने दे"ा के विभिन्न भागों में पनाह ली उससे पंजाब की पहाड़ियों में चित्रकला की पहाड़ी भौली विकसित हुई। ये कृतियां एक छोटी सी सतह पर चित्रित की जाती थी और इन्हें ''सूक्ष्म चित्रकारी'' कहा जाता था। इन चित्रकारों ने महाकाव्यों मिथकों और कथाओं को अपने चित्रों की विशयवस्तु बनाया। इनके अन्य विशय थे बारहमासा, रागमाला और महाकाव्यों के विशय आदि। सुक्ष्म चित्रकला केन्द्रों जैसे कांगड़ा, कुल्लू, बसोहली, गुलेर, चम्बा, गढ़वाल, बिलासपुर और जम्मू आदि से विकसित हुई। ''डब्ल्यू0 जी0 आर्चर के अनुसार– जम्मू में जो आरम्भिक चित्र प्राप्त हुए है वह सब बसोहली भौली के है अतः जम्मू के चित्रों के विशय में जानना आव"यक है।''

''जम्मू भौली के आरम्भ में यहाँ के आश्रय दाताओं एवं सामन्तों के व्यक्ति चित्र चित्रित हुए। आरम्भ में बीस वर्श यह भौली बसोहली भौली का अनुकरण करती रही। सम्भव है ये चित्र बसोहली मानकोट तथा जम्मू सभी स्थानों पर चित्रित हुए सन् 1750 ई0 में एक नवीन धारा का विकास हुआ। जिसे खण्डेलवाला ने कांगड़ा पूर्व भौली कहा है। जसरोटा के नैनसुख द्वारा चित्रित जम्मू के राजा बलवन्त सिंह का व्यक्तिचित्र जिस पर 1748 ई0 अंकित है। इस समय नैनसुख जम्मू में ही था तथा उसने राजा बलवन्त सिंह के दैनिक जीवन के

अनेक चित्र चित्रित किये, जिसमें उन्हें पूजा करते हुए, आखेट करते, अ"व निरिक्षण करते, संगीत श्रवण करते नृत्य द"र्न करते, भवन निर्माण तथा नाई से बाल बनवाने आदि स्थितियों में चित्रित किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय बलवन्त सिंह के चित्रों की बाढ़ आ गयी थी।''[2]

जम्मू चित्रकारों ने श्रृंगारिक दबी हुई प्रेम संबंधी इच्छाओं और भावनाओं को चित्र में स्वच्छन्दता से प्रतीको द्वारा साकार रूप दिया है। इससे उसमें काव्यात्मक सरलता भी आ गई है कृश्ण भक्ति संप्रदाय में इन भावनाओं को आश्रय मिल गया। अतः नारी के प्रतीक रूप में राधा और पुरुश रूप में कृश्ण का चित्रांकन किया जाने लगा। इस भौली में भावना भौतिक तथ्य के संसर्ग पर आधारित है। उन चित्रकारों ने श्रृंगार की मनोरंजक और भावपूर्ण द"ा की सजीव चित्रमय झांकियाँ प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत की है। ''पहाड़ी भौली की उप"ौलियों में हमें पहाड़ी क्षेत्र का वातावरण स्पश्ट रूप से देखने को मिलता है। पहाड़ी भौली के चित्रों में प्रायतः राजपूत भौली की समानता है। राजपूत भौली से ही पहाड़ी भौली का जन्म माना गया हैं।''[3] 'कामसूत्र' के अनुसार प्रेमी–प्रेमिका चित्रों अथवा गुप्त संकेतों द्वारा मनोभावों का आदान प्रदान करते थे जैसे कोमल पत्तो पर विभिन्न प्रकार की भाक्लें बनाने का अर्थ है रति, क्रोध, भाोक आदि के भाव व्यक्त करना। अपने प्रिय की प्रतिमा को चूमने, उठाने तथा उसका आलिंगन करने के बहाने अपने प्रेम भाव को प्रकट किया जाता है। चित्रों में संकेतों या प्रतीकों का प्रयोग पहाड़ी भौली में सबसे अधिक हुआ है। इन चित्रों में प्रायः नायक या नायिका को वि"ोश स्थिति में दिखाते हैं। सामान्यजन तो इस पृश्ठभूमि में नायक या नायिका को ही देखेगा, परन्तु जानकार व्यक्ति चित्रकार द्वारा व्यक्त गूढ़ अर्थ अर्थात् प्रतिक या सकेंत भी समझ जाता है। जम्मू भौली के चित्रों में ऐसे सरस भाव का चित्रण प्रायः देखने को मिलता है। प्रेम और युद्ध दोनों परस्पर विपरित स्थितियाँ होती है, परन्तु इनमें प्रतीकों का एक सा योग होता आया है। युद्ध में प्रतीको का विज्ञान के रूप में विकास हुया है, जबकि प्रेम में कला के रूप में चौंसठ कलाओं में प्रसिद्ध इस ललित कला में जम्मू चित्रकारों ने अपने मनोभावों को मनोवैज्ञानिक रूप में अंकित करके द"र्को को भावोद्वेलित किया है। भारतीय परिवे"ा और पात्र इन कलाकृतियों का माध्यम बने।

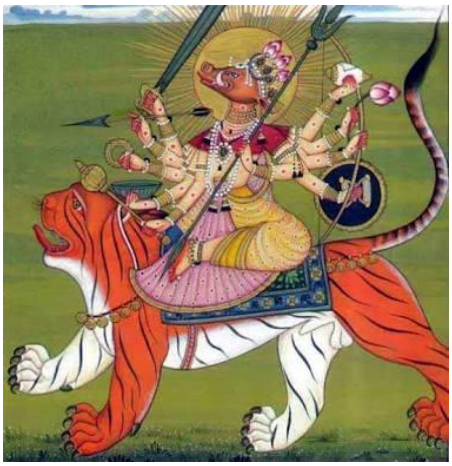

''पहाड़ी भौली की जम्मू भाखा पहले 'डोगरा स्कूल' के नाम से प्रसिद्ध थी। यह भाखा गढ़वाल तक फैली और इसी भाखा के कुछ चित्रों को अमृतसर के व्यापारी लोग तिब्बती या नेपाली कहा करते थे।''[4] आज भी 'डोगरा संग्रहालय' तथा

'अमर महल' जम्मू में जम्मू भौली से सम्बन्धित अनेक कलाकृतियों का अध्ययन किया जा सकता है। जिसमें से डोगरा संग्रहालय के अन्तर्गत रखी जम्मू भौली के चित्रों के वि"ोश अध्ययन की अव"यकता है। यह संग्रहालय इन कलाकृतियों के अध्ययन का वि"ोश स्त्रोत है। जिस पर प्रका"ा डालने की अति आव"यकता हैं। ये कलाकृतियॉ सभी के लिए समान रूप से आनन्ददायी सिद्ध होगी।

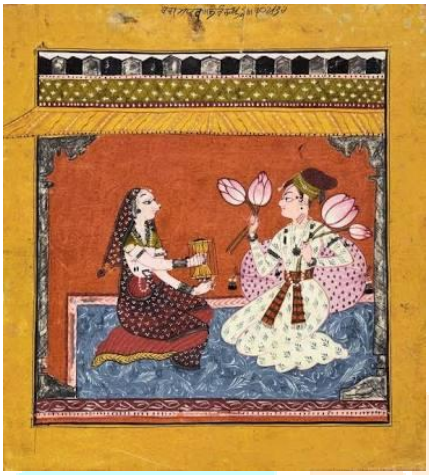

संदर्भ –

1. वर्मा अविना"ा बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास पेज न0 247
2. द्विवेदी प्रेम भांकर, राधा कृश्ण भारद्वाज , भारतीय चित्रकला में व्यक्ति चित्रण, कला प्रका"ान वाराणसी, 1996, पेज न0 256
3. मावड़ी एम0 एस0, भारत की प्रमुख चित्र भौलियॉ, ईस्टर्न बुक लिंकर्स (दिल्ली) 1989
4. गैरोला वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, चौखम्बा संस्कृति प्रतिश्ठान